© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
https://www.eurekajournals.com/shodh.html
ISSN: 2581-3501

आदिवासियों की जीवन-शैली और शादियों की परम्परा

डॉ. शहनाज बेगम

अतिथि सहायक प्राध्यापक, (समाजशास्त्र), एम.ए.(समाजशास्त्रए अंग्रेजी) एम.फील. पी.एच.डी. शासकीय घनश्याम सिंह गुप्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय बालोद (छ.ग.)

9 अगस्त को चाहे कनाडा, ब्राज़ील, न्यूज़ीलैण्ड, चीन या कोई और देश हो, पूरी दुनिया में विश्व आदिवासी दिवस खूब धूमधाम से मनाया जाता है। आदिवासी समाज के द्बारा इस दिवस को 1982 में हुईसंयुक्त राष्ट्र की पहली बैठक के बाद, 9 अगस्त 1994 को पहली बार विश्व आदिवासी दिवस का आयोजन किया गया था। 1982 में जो पहली बैठक हुईथी, वह खास तौर से पर्यावरण से जुड़े मुद्दों के बारे में चर्चा के लिए ही की गई थी। अत: कोई दो राय नहीं कि आदिवासी ही सबसे ज़्यादा पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं।

विश्व भर में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन होता है

दुनिया भर के लगभग 90 देशों में 47.6 करोड़ मूलनिवासी रहते हैं। संयुक्त राष्ट्र हर साल एक विषय निर्धारित करता है, जिसके अनुसार सभी लोग इस खास दिवस को मनाते हैं। चाहे कोई भी जनजाति हो, इस खास दिन को सभी आदिवासी बहुतही खुशी और उल्लास के साथ मनाते हैं। सब एक साथ मिल कर बहुतही परम्परागत तरीके से नाच गाना करते हैं। लोग अपने लोकगीत गाते हैं। इस दिन बहुतसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। लोग तलवार और धनुष-बाण लेकर नाचते हैं। साथ ही कुछ लोग हल के साथ अपने लोक गीतों पर नाचते हैं। बताया जाता है कि आदिवासी पूर्व में युद्ध जैसी परिस्थितियों के दौरान इन्हीं चीज़ों का प्रयोग हथियार के रूप में करते थे। हर साल की तरह इस साल आदिवासियों का यह खास पर्व पूर्व की तरह मनाना मुमकिन नहीं था।

आज जब पूरी दुनिया को कोरोना वायरस नाम की महामारी ने जकड़ रखा है, तो आदिवासी समुदाय भी अपने इस प्रिय त्यौहार को पूर्व की तरह से नहीं मना सके। इस महमारी के बीच कई समुदायों ने ऑनलाइन जश्न मनाने का निर्णय किया, तो कुछ समुदायों के लोगों ने वृक्षारोपण करने का निश्चय किया।

14 राज्यों के मूलनिवासियों में दोनों ही लिंग के लोगों को सामान हक

भारत की 2011 जनगणना के अनुसार, यहां 10 करोड़ से ज़्यादा आदिवासी रहते हैं। हमारे देश में कुल 14 राज्य है जहां ज़्यादातर मूलनिवासीरहते हैं। इनमें से कुछ छत्तीसगढ़, झारखण्ड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल,

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

गुजरात, राजस्थान हैं। हम सभी लोग इन्हें कई नामों से जानते हैं जैसे मूलनिवासी, आदिवासी, वनवासी, गिरिजन, देशज, स्वदेशी, आदि।

आदिवासी शब्द का अर्थ है ऐसे वासी जो बहुतशुरुआत से यहां रहते आ रहे हैं। सरकारी और कागज़ी तौर पर आदिवासियों को अनुसूचितजनजाति कहा जाता है। आपको यह जानकर थोड़ा आश्चर्य हो सकता है कि हमारे आदिवासी भाई-बहन मूलतौर पर किसी भगवान को नहीं मानते। उनके लिए सब कुछ प्रकृति है।

प्रकृति ही देवी और देवता हैं

आदिवासी लोग जल, जंगल, ज़मीन और जानवरों की ही पूजा करते हैं। साथ ही वे सूर्य और चंद्रमा की भी पूजा करते हैं। यह सभी बातें अलग-अलग जनजातियों के लिए अलग हो सकती हैं।

आदिवासी समुदायों को लोग पिछड़ा हुआ मानते हैं, क्योंकि यह आधुनिकता को नहीं अपनाना चाहते लेकिन एक ऐसी चीज़ है जो सबको इस एक समुदाय से सीखनी चाहिए। वह है आदिवासी समुदायों में लैंगिक समानता। यानी इनके यहां लड़कियों की संख्या लड़कों के बराबर है और यहां दोनों ही लिंग के लोगों को सामान हक दिए जाते हैं।

आज भी आदिवासी समाज के कई लोग अपने सांस्कृतिक कपडे पहनते हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि आदिवासियों की पहचान उनके कपड़ों व आभूषण से की जा सकती है। खास बात यह है कि आदिवासी दिवस पर भी लोग अपना पारम्परिक पहनावा ही पहनते हैं।

आज भी लोग धोती, आधी बांह की कमीज़, सर पर गोफन के साथ पगड़ी (फलिया) पहनते हैं। कुछ लोग तो 3 से 4 किलोग्राम चांदी का बेल्ट कमर पर बांधते हैं। यह बेल्ट बस वही लोग पहनते हैं जो इसको खरीद सकते हैं।

कुछ लोग तो अपने चेहरे पर अलग-अलग तरह की चित्रकारी भी करते हैं। यह पूर्ण सत्य है कि आज भी तमाम मूलनिवासी अपनी सभी परम्पराएं पहले की तरह निभाते हैं। चाहे फिर वह ब्याह हो, जन्मदिन हो या कोई और त्यौहार।

बात आदिवासी जनजातियों में शादी के रस्मों की

क्षेत्र दर क्षेत्र आदिवासियों की भाषा से लेकर उनकी परम्पराओं में बदलाव दिखाई देते हैं। इन बदलाव में आदिवासी समुदायों में होने वाली शादियां भी विभिन्न रस्मों के द्वारा सम्पन्न होती हैं। अत: कुछ समुदायों में अदा की जाने वाली शादी की रस्मों पर प्रकाश डालना ज़रूरी हैं।

गुजरात और राजस्थान की भील जनजाति में उल्टे फेरे लगाए जाते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि धरती भी उल्टी ही घूमती है। दरअसल आदिवासी अपनी ज़िंदगी को प्रकृति के अनुसार ही जीते हैं।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

इसी कारण लोग अपने घरों में भी उल्टी चलने वाली घड़ी रखते हैं। इस जनजाति में एक और अलग रस्म होती है। यहां शादी के वक्त जब लड़के वाले लड़की के घर जाते हैं, तो वह लोग लड़की की चाल पर ध्यान देते हैं।

अगर लड़की के पैर चलते हु एअंदर की ओर जाते है, तो लड़की को घर के लिए शुभ माना जाता है लेकिन अगर उसके पैर चलते हु एबाहर की तरफ आते हैं तो माना जाता है कि वह घर के लिए ठीक नहीं है।

लड़के के घर वाले लड़की की बोल-चाल पर भी बहु तध्यान देते हैं। भील जनजाति के लोग दूसरी जनजाति, जाति, धर्म में शादी कर सकते हैं लेकिन अपने ही गोत्र में शादी करना सख्त मना है। ऐसा करने पर जनजाति से बाहर निकाल दिया जाता है। यह लोग आज भी शादी सांस्कृतिक तरीके से ही करते हैं।

बाकी लोगों को शादी की सूचना देने का तरीका भी इस जनजाति का बहु तही अलग है। यहां लोग अपने घर के मुख्य दरवाज़े के बाहर चावल और गेंहू के कुछ दाने रख देते हैं। जिसे देखकर लोग समझ जाते हैं कि इस घर में किसी का रिश्ता तय हो गया है।

भील जनजाति में शादी 3 से 4 दिनों में पूरी हो जाती है। इस जनजाति में और भी कई अनोखी रस्में हैं। उनमें से एक "चांदला" है। इस रस्म में जनजाति के लोग लड़के और लड़की के घर वालों को कुछ पैसे देकर उनकी आर्थिक मदद करते हैं।

मेले में जोड़ी

राजस्थान की मीणा जनजाति में सांस्कृतिक तौर पर एक मेला लगाया जाता है। इस मेले में जनजाति के युवक और युवती आते हैं। वह एक-दूसरे के साथ खेल खेलते हैं। एक दूसरे से मिलने-जुलने के इस क्रम में यदि वह दोनों एक-दूसरे को पसंद आ गए, तभी बात आगे बढ़ाई जाती है।

अंतिम निर्णय फिर भी माँ-बाप का ही होता है। मेले के बाद, लड़का कुछ दिनों तक लड़की के घर में ही रहता है, ताकि लड़की के पिता उसकी योग्यता को परख सकें। अगर किसी भी कारण से लड़की के घर वालो को लड़का पसंद नहीं आता है, तो वह दोनों शादी नहीं कर सकते हैं।

इस जनजाति के लोगों का मानना है कि यहां के लोगों पर आधुनिकता का बहु तअसर है, इसलिए अब लोग पुरानी रस्मों को धीरे-धीरे भूल रहे हैं। मीणा जनजाति में विवाह तय करने का काम गाँव का नाई करता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि यह ज़िम्मेदारी नाई की ही होती है। वह ही लड़का और लड़की को मिलवाता है और शादी की बात करवाता है।

हम सभी जानते हैं हर माँ-बाप बच्चों की शादी को लेकर एक सपना देखते हैं लेकिन कई जनजातियों की तरह मीणा जनजाति में भी फेरे के समय, लड़की के माँ-बाप मंडप पर नहीं बैठ सकते। इसके पीछे भी एक मान्यता है कि यह जोड़े की खुशी के लिए ज़रूरी है। ताकि उनका दम्पत्य जीवन सुखी रहे।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

लड़की और लड़के के घर वाले एक कॉपी में यह लिखते हैं कि किसने कितनी मदद की। ताकि जब उनके घर कोई शादी हो तो वह भी उनकी मदद कर सकें। इसी तरह यहां दहेज नहीं होता, बल्कि दोनों परिवार मिलकर सभी तैयारियां करते हैं।

शादी करने के बारह तरीके

झारखण्ड एक ऐसा राज्य है जहां ज़्यादातर मूल निवासी रहते हैं। उनमे से कुछ संताल, उरांव, मुंडा, असुर, बैगा हैं। इन सभी जनजातियों में पारंपरिक रीति-रिवाज बहु तमायने रखते हैं। यहां शादी-विवाह भी पूरे रीति-रिवाज के साथ किए जाते हैं। झारखण्ड की एक जनजाति है संताल। संताल जनजाति में 12 तरीकों से शादियां हो सकती हैं।

उनमें से एक "सादय बपला" है, शादी के इस तरीके में दोनों परिवारों की रज़ामंदी बहु तही ज़रूरी है। इस विवाह को एक आदर्श विवाह माना जाता है। दूसरे तरह के विवाह को "घरदी जवाय" कहा जाता है। यह विवाह तभी होता है जब लड़की का भाई नाबालिग हो। लड़का अपने लड़की के भाई के बालिग होने तक लड़की के घर में ही रहता है। फिर उसके बाद अपनी पत्नी के साथ अपने घर लौट जाता है।

विवाह के तरीके का अगला नम्बर "हीरोम चेतान बापला" है। इस विवाह में लड़का पहली पत्नी के होते हु ए दूसरा विवाह कर सकता है लेकिन यह तभी सम्भव है अगर पहली पत्नी इसकी मंज़ूरी दे। यह विवाह एक परस्थिति में ही होता है अगर पहली पत्नी से कोई सन्तान ना हो और अगर हो भी तो सिर्फ लड़की हो।

बहरहाल और भी 9 तरह की शादी इस जनजाति में होती हैं। संताल जनजाति में शादी के दिन दूल्हा और दुल्हन अपनी छोटी उंगली में से खून निकालकर एक-दूसरे के माथे पर लगाते हैं।

'लीव इन रिलेशन' जैसी रस्म

पश्चिमी संस्कृति में शादी से पहले सम्बन्ध बनाना और साथ रहना आम बात है लेकिन भारतीय संस्कृति में यह एक असाधारण बात है। बावजूद इसके भारत में भी कुछ ऐसी जनजातियां हैं जहां इसे एक रस्म माना जाता है। इस रस्म के अनुसार, लड़का-लड़की शादी से पहले एक साथ एक घर में रह सकते हैं और शारारिक सम्बन्ध भी बना सकते हैं। इस रस्म को "घोटूल" कहते हैं।

यह रसम छत्तीसगढ़ की गोंड जनजाति के बीच बहु तही लोकप्रिय है। इस रसम में लड़के और लड़कियां आपस में मिलते हैं और अगर उन्हें एक-दूसरे से बात करके अच्छा लगता है, तो वह एक-दूसरे को अच्छे से जानने के लिए एक साथ रहना शुरु करते हैं। इस रस्म को करने के लिए 10 से अधिक उम्र होनी चाहिए।

सबको अपने जीवन में कम-से-कम एक बार इस रस्म को करना होता है। इस रस्म के दौरान अगर किसी लड़के को किसी लड़की को अपनी तरफ आकर्षित करना होता है, तो वह उसके लिए एक कंघी अपने हाथों से बनाता है।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

अगर लड़का और लड़की एक-दूसरे को पसन्द करने लगते हैं, तो वह दोनों एक साथ रहना शुरु कर देते हैं। जहां जीवन से सम्बन्धित कई तरह की चीज़ों को सीखते हैं और एक-दूसरे को अच्छे से जानने के बाद घर वालो की मंज़ूरी के साथ शादी कर लेते हैं।

आज के समय में आधुनिक बनना एक ट्रेंड-सा बन गया है। सब अपने संस्कारों को छोड़ कर आधुनिकता की तरफ भाग रहे हैं। जब से विज्ञान ने तरक्की की है, सबको लगने लगा है आधुनिकता ही जीवन जीने का मूल है लेकिन इस नई दुनिया में आज भी आदिवासी जनजातियां अपनी संस्कृति, परम्परा, रिवाज को बचाने की कोशिश कर रही हैं।

शिल्पकला का एक गाँव

शिल्पकला का एक गाँव (एकताल, रायगढ़) झारा शिल्प कला – Dhokra Art Village

रायगढ़ जिला मुख्यालय से लगभग 12 किलोमीटर ओड़िशा राज्य की सीमा की ओर एक छोटा सा गांव एकताल अपनी हस्तनिर्मित धातु की शिल्पकारी के लिए मशहू रहै। इस गाँव की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यहाँ अनेकों राज्य और राष्ट्र स्तरीय पुरस्कार विजेता कलाकारों का घर है।

ढ़ोकरा शिल्प कला

एकताल की इस विशेष कला को ढ़ोकरा शिल्प कला के नाम से जाना जाता है। यहाँ के शिल्पकार आज भी मोम क्षय विधि जैसी प्राचीन कार्य पद्धति का इस्तेमाल करते हैं, जिसका प्रयोग सिंधु घाटी सभ्यता की कालावधि के दौरान भी होता था। कांस्य धातु शिल्प धातु के ढालने की प्राचीनतम ज्ञात विधियों में से एक है। ढ़ोकरा वस्तुओं और आकृतियों से मिलते-जुलते धातु से बने टुकड़े हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में मिले हैं, जिससे इस विश्वास को बल मिलता है कि यह शिल्प- कला संभवतः प्रागैतिहासिक काल से चली आ रही है।

इस पद्धति के अनुसार सबसे पहले मोम से बनी पट्टियों से चिकनी मिट्टी की बनी सिल्ली पर तरह-तरह के ढांचे बनाए जाते हैं। यह मोम की पट्टियाँ एक छोटी सी लकड़ी की मशीन की सहायता से बनाई जाती हैं, जिसमें सामान्य सी दबाव प्रक्रिया का प्रयोग किया जाता है। फिर यह मोम पूर्ण रूप से स्थिर होने के पश्चात उस पर चिकनी मिट्टी की और एक परत चढ़ाई जाती है, जिसे ठोस बनाने के लिए बाद में पकाया जाता है।

इन कलाकारों की अधिकतर कृतियाँ आदिवासी देवी-देवताओं और लोक-कथाओं या उनसे जुड़े पात्रों से संबंधित हु आकरती थीं। लेकिन अब धीरे-धीरे ये लोग उपयोगी वस्तुएं जैसे कि बर्तन आदि की आकृतियाँ बनाने का प्रयास भी करने लगे हैं। बाजार में बनी मांग को समझते हु एयह कलाकार इस विश्व की बदलती आवश्यकताओं के अनुसार कुछ भी बना सकते है।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

झारा शिल्प कला से बने सामानों की देश भर में मांग है

यहाँ के शिल्पकार देश भर में घूम – घूम अपनी इस अनूठी कला का प्रदर्शन करते है। देश के विभिन्न भागो और अन्य राज्यों से भी इन्हे अपनी कला का प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया जाता है। जो यहाँ के शिल्पकारों के जीविकोपार्जन का मुख्य साधन भी है।

रायगढ़ को छत्तीसगढ़ की कला और संस्कृति की राजधानी भी कहा जाता है। झारा शिल्प कला से जुड़े हु ए कलाकारों को शासन द्वारा प्रोत्साहित किया जाता रहा है, जिससे उन्हें इस क्षेत्र रोजगार के अच्छे अवसर मिले और उनकी आमदनी दोगुनी हो। जिसके लिए शासन द्वारा जिला मुख्यालय में में झारा शिल्प एम्पोरियम बना कर जिले भर के झारा शिल्प कलाकारों को दुकान उपलब्ध कराई गई हैं। झारा शिल्प ऐसी कला है जिसकी मूर्तियों को लेने पूरे देश से लोग अब रायगढ़ पहुं चतेहैं। सरकार के सहयोग और योजनाओं को झारा शिल्प कलाकार फायदा उठा रहे हैं और इसकी तारीफ भी कर रहे हैं। अब तक झारा शिल्प से जुड़े कलाकारों को अपने द्वारा बनाए गए मूर्तियों को बाजार तक ले जाने में काफी परेशानी होती थी। इस अदभुत कला को समय पर बाजार नहीं मिल पाता था। इस काम को करने वाले अधिकांश लोग अनुसूचित जनजाति के हैं। छत्तीसगढ़ सरकार और अनुसूचित जनजाति विभाग ऐसे कलाकारों की कला को जीवंत रखने को हर संभव मदद कर रही है

छत्तीसगढ़ के प्रमुख झारा शिल्पकार

एकताल में दर्जन भर के करीब राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित ग्रामीण हैं और लगभग पैंतीस राज्य स्तरीय पुरस्कार वाले निवासी हैं।

गोविन्द राम झारा – शिल्पग्राम एकताल के निवासी गोविन्द राम झारा शिल्पकला के पर्याय मने जाते है। झारा शिल्पकला को देश विदेश पहुँचानेमें इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वे एकताल ग्राम के शिल्प को चरम उत्कर्ष पर संस्थापित करने वाले प्रथम पुरोधा भी थे। शंकर लाल झारा को धातु की असाधारण कुर्सी बनाने में महारथ हासिल हैंइन्हे भी राष्ट्रीय पुरस्कार पंखों वाले घोड़े पर मिला था।

श्रीमती बुधियारिन देवी

बुधियारिन देवी झारा शिल्प कला में राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता है। इन्हें ये अवार्ड 'चंद्री माता का रथ' बनाकर शोकेस करने पर हस्त शिल्प विकास बोर्ड द्वारा मिला था। अपनी कला का प्रदर्शन इन्होने सूरजकुंड, शिमला, बंगलोर के अलावा और भी कई जगहों पर क्राफ्ट मेला में किया है।

एकताल गांव के अधिकतर निवासी झारा (गोंड आदिवासी समुदाय की उपजाति) जनजाति के हैं। भले ही यहाँ के लोगों को देश भर में सम्मान मिला हो, कइयों ने तो विदेशों में भी अपनी कला को दिखाया है पर इन लोगों का रहन सहन बिलकुल सामान्य है।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

छत्तीसगढ़ सरकार ने यहाँ के बने क्राफ्ट को बेचने के लिए एक समिति का गठन किया है – झिटकू मिटकी वन हस्त कला समिति। सिंधु घाटी के समय से चली आ रही यह शिल्प कला कहीं लुप्त न हो जाये, इन कलाकारों से बने सामानों को खरीदें जरूर।

झारा शिल्प से सजी रेलवे स्टेशन की दीवारें, मोह रही है मन

दूसरे शहरों राज्यों आने वाले यात्रियों को स्टेशन में छत्तीसगढ़ विशेषकर बस्तर की झलकियां देखने को मिल रही हैं।

रायगढ़। Raigarh News

शहर व जिले में विकास की बयार बहाने के लिए जिला प्रशासन, नगर निगम तमाम प्रकार की इंतजाम कर रही है। इसी कड़ी में लाक डाउन के दौरान रेलवे विभाग द्वारा भी ए ग्रेड का दर्जा प्राप्त रायगढ़ स्टेशन को छत्तीसगढ़ आदिवासी व अन्य कलाकृतियों से सांस्कृतिक रूप दे रही थी । जिसमें अब यह कार्य पूर्ण होने के बाद छत्तीसगढ़ की संस्कृति की झलक नजर आ रही है।

गौरतलब है कि कलानगरी के नाम से पहचाने जाने वाले इस शहर से बाहरी यात्रियों को परिचित कराने के उद्देश्य से ही रेल विभाग के द्वारा स्टेशन में नए तरीके से साज सजावट का कार्य करवाया जा रहा है। इसमें रायगढ़ रेलवे स्टेशन प्रांगण बाहर नया रूप कलाकृतियों से सजाया जा रहा था, जो 100 फीसदी पूर्ण हो चुका है। अब यहां दूसरे शहरों राज्यों आने वाले यात्रियों को स्टेशन में छत्तीसगढ़ विशेषकर बस्तर की झलकियां देखने को मिल रही हैं।

यह झलकियां टाइल्स में उकेरी गई हैं और फिर उसे दीवारों में चस्पा किया गया है। इस टाइल्स में झारा शिल्प की आकृतियां है, जो रियासत काल को अनुभूति करा रहा है। इसके अलावा प्रदेश की पारम्परिक लोक नृत्य भी है रेल विभाग के अधिकारियों के मुताबिक आने वाले दिन में।

दो मूर्ति लगेगी यह मूर्ति लाक डाउन व अन्य कारणों से लगने में विलंब का दंश झेल रही है। फिलहाल रेल प्रबंधन साज सज्जा को तहरीज दे रहे है। वही यात्रियों की संख्या कोरोना के कारण कम है लेकिन जो स्टेशन आ रहे है वो इन कलाकृतियों को देख का तारिफ कर रहे है।

रायगढ़ और बस्तर की झलकियों को उकेरा गया

प्रदेश व जिले से बाहर से आने वाले यात्री जैसे ही स्टेशन में उतरेंगे या फिर शहर से जाने के लिए स्टेशन आएंगे तो उन्हें परिसर के प्रांगण की दीवारों में लगे रायगढ़ व बस्तर झारा शिल्प की कलाकृति नजर

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

आएगी। इन टाइल्सों में रायगढ़ और बस्तर जिले की झारा शिल्प कला को बेहद आकर्षक रूप से उकेरा गया है।यह प्रदेश की वैभव शाली संस्-ति की झलक दिखा रही है।

आकृति कला से जुड़े लोगों को कर रही है आकर्षित

दीवार पर चस्पा कला-तियों के बारे में जब कुछ लोग व यात्रियों से चर्चा किया गया तो उन्होंने बताया कि यह कला-तियों को कलाकार ही बखूबी समझ पाएगा और बता पाएगा। हालांकि झारा शिल्प की स्टेशन परिसर में उकेरी गई आ-तियों को लोगों को आकर्षित कर रही है । लोगो ने यह भी कहा कि इस कला-तियों को भावी पीढ़ी और वर्तमान पीढ़ी बेहतर तरीके से समझ सके इसके लिए सांकेतिक जानकारी भी उल्लेख करना चाहिए।

दो मूर्ति लगते ही रिसायत कालीन वैभव का होगा अनुभव

जिले की पहचान कला संगीत धर्म कऔर दानवीर की नगरी के नाम से जाना जाता है संगीत सम्राट महाराजा चक्रधर सिंह की ख्याति देश भर में है। इसे देखते हु एप्रदेश की पारंपरिक नृत्य की मुद्रा में खड़ी महिलाओ की दो बड़ी मूर्तियां भी प्रवेश द्वार में लगाई जायेगी। इससे रियासतकालीन की वैभव गाथा की झलकियां देखने को मिलेंगी।

स्टेशन प्रांगण में चलने के दौरान रियासतकालीन शहर रायगढ़ को तब के राजा-महाराजाओ के जमाने में किस तरह सजाया जाता था,उसका एहसास कला कृतियों से होगा। स्टेशन मास्टर पीके राउत ने बताया कि बाहर की दो मूर्तियों के बारे में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता है कि वह कब लगेंगी। कला की पहचान से लोग वाकिफ हो इसके लिए प्रयास करेंगे।

छत्तीसगढ़ में कला एवं शिल्प

छत्तीसगढ़ अपनी विशिष्ट कलाओं और शिल्पों के लिए जाना जाता है जो राज्य और इसके लोगों की सादगी और परंपराओं को प्रतिबिंबित करते हैं। वे राज्य की पेशकशों के सबसे दिलचस्प पहलुओं में से एक हैं। हाथ से छपाई आमतौर पर बस्तर के जंगलों में पाए जाने वाले तेल से निकाली गई प्राकृतिक वनस्पति डाई से की जाती है। इन कपड़ों में सूती साड़ियाँ जाना से नाम के साड़ी कोसा बस्तर जिन्हें - है जाता, पोशाक सामग्री और पर्दे शामिल हैं।

ढोकरा या बेल धातु

छत्तीसगढ़ के बस्तर और रायगढ़ जिले ढोकरा कला के लिए जाने जाते हैं, जिसमें आमतौर पर नीरस सोने की मूर्तियाँ बनाने के लिए बेल धातु का उपयोग किया जाता है। बस्तर की 'घड़वा' और रायगढ़ की 'झारस' जैसी जनजातियाँ इस कला का अभ्यास करती हैं और खोई हु ईमोम तकनीक या खोखली ढलाई

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

के साथ उत्पादों को जीवंत बनाती हैं। प्रत्येक टुकड़ा कस्टम मेड है और कोई भी दो टुकड़े कभी भी एक जैसे नहीं हो सकते। ढोकरा की पारंपरिक तकनीक सरल है लेकिन इसके लिए बहुत सटीकता की आवश्यकता होती है और प्रत्येक उत्पाद, चाहे वह दैनिक उपयोग के लिए बनाया गया हो या आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए, जटिल और विस्तृत है। छत्तीसगढ़ के सबसे लोकप्रिय शिल्पों में से एक, ढोकरा की उत्कृष्टता दुनिया भर के यात्रियों को पसंद आती है और यह अद्वितीय शिल्प अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राज्य का प्रतिनिधित्व करता है।

हस्तशिल्प (संस्कृति एवं कला)

भारत के आदिवासी कलाओं में बस्तर की आदिवासी परंपरागत कला कौशल प्रशिद्ध है। जनजातीय कलाओं में प्रमुख बस्तर कला है जो भारत के बस्तर-क्षेत्र के आदिवासियों द्वारा प्रचलित है और अपने अद्वितीय कलाकृतियों के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। बस्तर के आदिवाशी समुदाय अपनी इस दुर्लभ कला को पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित करते आ रहे है, परन्तु प्रचार के आभाव में यह केवल उनके कुटीरों से साप्ताहिक हाट बाज़ारों तक ही सीमित है। उनकी यह कला बिना किसी उत्कृष्ट मशीनों के उपयोग के रोजमर्रा के उपयोग में आने वाले उपक्रमों से ही बनाये जाते हैं। बस्तर के कला कौशल को मुख्य रूप से काष्ठ कला, बाँस कला, मृदा कला, धातु कला में विभाजित किया जा सकता है। काष्ठ कला में मुख्य रूप से लकड़ी के फर्नीचरों में बस्तर की संस्कृति, त्योहारों, जीव जंतुओं, देवी देवताओं की कलाकृति बनाना, देवी देवताओं की मूर्तियाँ, साज सज्जा की कलाकृतियाँ बनायी जाती है। बांस कला में बांस की शीखों से कुर्सियां, बैठक, टेबल, टोकरियाँ, चटाई, और घरेलु साज सज्जा की सामग्रिया बनायीं जाती है। मृदा कला में , देवी देवताओं की मूर्तियाँ, सजावटी बर्तन, फूलदान, गमले, और घरेलु साज-सज्जा की सामग्रियां बनायी जाती है। धातु कला में ताम्बे और टिन मिश्रित धातु के ढलाई किये हुए कलाकृतियाँ बनायीं जाती है, जिसमे मुख्य रूप से देवी देवताओं की मूर्तियाँ, पूजा पात्र, जनजातीय संस्कृति की मूर्तियाँ, और घरेलु साज-सज्जा की सामग्रियां बनायीं जाती है।बस्तर जिला वनों से ढका हुआ है। यह भारत में उपस्थित जनजातिय समुदाय का बड़ा हिस्सा यहाँ निवासरत है | बस्तर शिल्प की दीवार दुनिया भर में कला उत्साही और connoisseur का ध्यान आकर्षित करते हैं। बस्तर कलाकृतियों आमतौर पर जनजातीय समुदाय की ग्रामीण जीवनशैली को दर्शाती है|

आदिवासी निश्चित रूप से भारत के पहली धातु स्मिथ थे और वे अभी भी प्राचीन अभ्यास के साथ जारी हैं। ये जनजातीय कलाकार धातु की पुरानी प्रक्रियाओं के माध्यम से, जीवन, प्रकृति और देवताओं के अनूठे दृश्य को लोहे में उकेरते हैं । उनकी प्रक्रिया सरल है – इसमें मूल रूप से धातु को फोर्जिंग और हथौड़ा द्वारा रूप देना है। बस्तर अंचल के हस्तशिल्प, चाहे वे आदिवासी हस्तशिल्प हों या लोक हस्तशिल्प, दुनिया-भर के कलाप्रेमियों का ध्यान आकृष्ट करने में सक्षम रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि , इनमे इस आदिवासी बहुल अंचल की आदिम संस्कृति की सोंधी महक बसी रही है। यह शिल्प-परंपरा और उसकी तकनीक बहुत पुरानी है। देवी त्यौहार , तीज त्यौहार, चैतराई, आमाखानी, अकती, बीज खुटनी, हरियाली, इतवारी, नयाखाई आदि बस्तर के आदिवासियों के मुख्य त्यौहार हैं। आदिवासी समुदाय एकजुट होकर

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

बूढ़ादेव, ठाकुर दाई, रानीमाता, शीतला, रावदेवता, भैंसासुर, मावली, अंगारमोती, डोंगर, बगरूम आदि देवी देवताओं को पान फूल, नारियल, चावल, शराब, मुर्गा, बकरा, भेड़, गाय, भैंस, आदि देकर अपने-अपने गांव-परिवार की खुशहाली के लिए मन्नत मांगते है।

18वीं और 19वीं शताब्दी में जनजातीय विद्रोह

आदिवासी समुदाय हमेशा से ही स्वभाव से बहु तरूढ़िवादी रहे हैं और अपने समाज की विशेषताओं को बरकरार रखना चाहते थे। भारतीय जनजातीय विद्रोह, विद्रोह और आंदोलन क्रांतिकारी विचारों से प्रेरित थे। उनके जीवन जीने के तरीके में हस्तक्षेप के बाद, भारत के विभिन्न क्षेत्रों के विविध आदिवासी समुदायों ने ब्रिटिश शासन के दौरान ब्रिटिश भारत सरकार की शोषणकारी और भेदभावपूर्ण प्रथाओं के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया।

इस लेख में, हम ब्रिटिश भारत में हु एआदिवासी विद्रोहों का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करते हैं। यह जानकारी उम्मीदवारों के लिए उपयोगी होगी क्योंकि वे यूपीएससी सीएसई , एसएससी, राज्य सेवाओं, सीडीएस, एनडीए, बैंक पीओ और रेलवे समेत अन्य परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं।

ब्रिटिश भारत में जनजातीय विद्रोह यूपीएससी

भारत के विभिन्न आदिवासी समूहों में से कई ने अंग्रेजों द्वारा उनके जीवन और क्षेत्र में जबरदस्ती और विनाशकारी घुसपैठ के खिलाफ विद्रोह किया। औपनिवेशिक शक्तियों के आगमन से पहले आदिवासी सैकड़ों वर्षों से अपने जंगलों में शांतिपूर्वक और प्रकृति के साथ सद्भाव से रह रहे थे। अंग्रेज आए और उनके जीवन के तरीके में कई बदलाव लाए और बाहरी लोगों को भी अपने क्षेत्र में लाया। इससे वे अपनी ही भूमि के मालिक से लेकर मजदूर और कर्जदार की स्थिति में आ गये। विद्रोह मूलतः इस अवांछित घुसपैठ के विरुद्ध और अपनी स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए थे।

कब्जे वाले भौगोलिक क्षेत्र के अनुसार, आदिवासी आंदोलनों को दो प्रकारों में विभाजित किया गया है।

क) **गैरजनजाति सीमांत-** : ये जनजातियाँ कुल जनजातीय आबादी का 89% हैं। गैरजनजातियाँ सीमांत-आंध्र ज्यादातर, पश्चिमही तक भारत मध्य और भारत मध्य- सीमित थीं। खोंड, सावरा, संथाल, मुंडा, ओरांव, कोया, कोल, गोंड और भील कुछ जनजातियाँ थीं जिन्होंने आंदोलनों में भाग लिया। इन जनजातियों के विद्रोह काफी हिंसक थे और इनमें कई महत्वपूर्ण विद्रोह शामिल थे।

ख) **सीमांत जनजातियाँ:** ये पूर्वोत्तर के सात सीमावर्ती राज्यों नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, असम, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा के निवासी हैं।

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के सामान्य जागरूकता अनुभाग के लिए अधिक विषयों की जांच करने के इच्छुक उम्मीदवार स्टेटिक जीके पेज पर जा सकते हैं। इसमें शामिल विषय सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए सामान्य हैं।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

उम्मीदवार नीचे दिए गए लिंक से ब्रिटिश भारत में जनजातीय विद्रोह नोट्स पीडीएफ भी डाउनलोड कर सकते हैं।

ब्रिटिश भारत में जनजातीय विद्रोह (यूपीएससी नोट्स)

भारत में जनजातीय विद्रोह की सूची

जनजातीय आंदोलनों को वर्गीकृत करने के लिए निम्नलिखित तीन चरणों का उपयोग किया जाता है:

- **पहला चरण)1795-1860):** यह ब्रिटिश साम्राज्य के उद्भव, विकास और स्थापना के साथ ही हुआ। जनजातीय समाज के शीर्ष वर्ग ने, पारंपरिक समूह के नेतृत्व में, जिनके विशेषाधिकार भारत में उपनिवेशवाद द्वारा कम कर दिए गए थे, नेतृत्व का निर्माण किया। इस चरण में प्रमुख आदिवासी विद्रोह थे: **कोल विद्रोह, संथाल विद्रोह, खोंड विद्रोह और प्रारंभिक मुंडा विद्रोह** ।
- **दूसरा चरण)1860-1920):** इसमें **कोया विद्रोह** और **बिरसामुंडा के नेतृत्व वाला मुंडा** विद्रोह शामिल है।
- **तीसरा चरण)1920-1947):** इसमें **चेंचू आदिवासी आंदोलन, रम्पा विद्रोह** और **तानाभगत उरांव/ हैं शामिल आंदोलन** ।

भारत में जनजातीय विद्रोहों की सूची		
वर्ष	**आदिवासी विद्रोह**	**विशेषताएँ**
1776	चुआर विद्रोह	भूमि राजस्व मांगों और आर्थिक संकट के खिलाफ, मिदनापुर के आदिवासी आदिवासियों द्वारा आयोजित।
1778	पहाड़ियाओं का विद्रोह	इसका नेतृत्व राजा जग्गनाथ ने किया था जिन्होंने अपनी भूमि पर ब्रिटिश विस्तार के खिलाफ राज महल पहाड़ियों के पहाड़िया लोगों का नेतृत्व किया था।
1818-1831 और 1913	भील विद्रोह	कंपनी के शासन के विरुद्ध पश्चिमी घाट में भील राज का गठन हुआ।भील राज के लिए लड़ने के लिए 1913 में गोविंद गुरु के नेतृत्व में फिर से संगठित हुए।
1820-37	हो और मुंडा विद्रोह	नई कृषि राजस्व नीति के खिलाफ सिंहभूम और छोटानागपुर क्षेत्र में राजा पाराहाट के नेतृत्व में हो आदिवासियों द्वारा। यही आगे चलकर मुंडा विद्रोह बन गया।
1822-29	रामोसी विद्रोह	पश्चिमी घाट के रामोसी आदिवासियों द्वारा, चित्तूर सिंह के नेतृत्व में, क्षेत्र पर अंग्रेजों के कब्जे के खिलाफ।
1829	कोली विद्रोह	गुजरात और महाराष्ट्र के आदिवासियों ने 1829, 1839 और फिर 1844-48 में कंपनी के नियंत्रण के खिलाफ विद्रोह किया।
1832	कोल विद्रोह	बुद्धो बागत के नेतृत्व में छोटानागपुर के आदिवासियों ने

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

		अंग्रेजों और साहू कारों के खिलाफ विद्रोह किया।
1837-56	खोंड विद्रोह	चक्र बिसोई के नेतृत्व में तमिलनाडु से लेकर बंगाल तक की पहाड़ियों के आदिवासियों ने आदिवासी रीति हस्तक्षेप में रिवाजों- खिलाफ के लगाने कर नए और विद्रोह किया।
1855-56	संथाल विद्रोह	साहू कारों और जमींदारों के खिलाफ सिदो और कान्हू के नेतृत्व में बिहार के आदिवासियों ने।
1868	नाइकाडा आंदोलन	मध्य प्रदेश और गुजरात के आदिवासियों ने अंग्रेजों के खिलाफ और सवर्ण हिंदुओं ने धर्म राज की स्थापना की।
1870 के दशक	खरवार विद्रोह	बिहार के आदिवासियों ने राजस्व बंदोबस्त गतिविधियों के खिलाफ भागरीट माझी के नेतृत्व में नेतृत्व किया।
1867	भुइयां और जुआंग विद्रोह	क्योंझर, उड़ीसा की जनजातियों ने 1867 और 1891 में दो बार विद्रोह किया।
1899-1900	मुंडा विद्रोह	छोटानागपुर क्षेत्र के आदिवासियों ने बिरसा मुंडा के नेतृत्व में 'दिकुओं' के खिलाफ विद्रोह किया।
1879-80	कोया विद्रोह	टोमा सोरा और राजा अन्नंतयार के नेतृत्व में पूर्वी गोदावरी क्षेत्र के आदिवासियों ने पुलिस और साहू कारों के खिलाफ विद्रोह किया।
1910	बस्तर विद्रोह	जगदलपुर के आदिवासियों द्वारा नये सामंती एवं वन करों के विरुद्ध।
1914-1919	टाना भगत आंदोलन	जतरा भगत और बलराम भगत के नेतृत्व में छोटानागपुर के आदिवासियों ने बाहरी लोगों के हस्तक्षेप के खिलाफ विद्रोह किया।
1921-22	चेंचुस विद्रोह	केमें नेतृत्व के हनुमंथु . नल्लामल्ला पहाड़ियों के आदिवासियों ने ब्रिटिश वन कानूनों के खिलाफ विद्रोह किया।
1922-24	रम्पा विद्रोह	ब्रिटिश हस्तक्षेप के खिलाफ आंध्र प्रदेश के कोयास के अल्लूरी सीतारमन राजू के नेतृत्व में।
उत्तर पूर्वी सीमांत जनजातीय आंदोलन		
1828-33	अहोम का विद्रोह	असम में बर्मी युद्ध के बाद अंग्रेजों द्वारा अपना क्षेत्र छोड़ने का वादा पूरा न करने के विरुद्ध।
1830 के दशक	ख़ासियों का विद्रोह	तीरथ सिंह के नेतृत्व में जयन्तिया और गारो की पहाड़ियों में उनके क्षेत्र पर कब्जे के खिलाफ।
1830 के दशक	सिंगफोस का विद्रोह	असम में अंग्रेजों द्वारा अपने क्षेत्र पर कब्जे के खिलाफ।
1917- 19	कुकियों का विद्रोह	मणिपुर में, विश्व युद्ध के दौरान श्रमिकों की भर्ती की ब्रिटिश

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

		नीतियों के खिलाफ।
1920	ज़ेलियांगसॉन्ग आंदोलन	कुकी हिंसा के दौरान उनकी रक्षा करने में अंग्रेजों की विफलता के खिलाफ मणिपुर की जनजातियों द्वारा।
1905-31	नागा आंदोलन	मणिपुर के आदिवासियों द्वारा, जादोनांग के नेतृत्व में ब्रिटिश शासन के खिलाफ और नागा राज का गठन किया गया।

क्या आप सिविल सेवा में करियर बनाना चाहते हैं? आईएएस की तैयारी के लिए निम्नलिखित लिंक देखें -

- पीआईबी सारांश
- दैनिक करेंट अफेयर्स
- यूपीएससी मेन्स में विषयजीएस वार- 1 प्रश्न
- यूपीएससी मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन पेपर 1 पाठ्यक्रम, रणनीति और संरचना
- यूपीएससी मेन्स जीएस 1 प्रश्न उत्तर लेखन

भील विद्रोह (1818-1831)

- भील महाराष्ट्र के खानदेश क्षेत्र के थे।
- 1818 में, अंग्रेजों ने इस क्षेत्र में अपना प्रवेश किया और भील क्षेत्रों पर अतिक्रमण करना शुरू कर दिया।
- मूल भील जनजाति अपनी भूमि पर किए गए किसी भी ब्रिटिश परिवर्तन को स्वीकार करने के लिए किसी भी तरह से तैयार नहीं थी।
- परिणामस्वरूप उन्होंने भूमि पर विदेशियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।
- विद्रोह का कारण ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों भीलों के साथ क्रूर व्यवहार था, जिन्होंने उन्हें उनके पारंपरिक वन अधिकारों से वंचित कर दिया और उनका शोषण किया।
- अंग्रेजों ने विद्रोह को दबाने के लिए सेना भेजकर जवाब दिया।
- लेकिन विद्रोह व्यर्थ नहीं गया, क्योंकि अंग्रेजों ने शांति समझौते के तहत विभिन्न करों में रियायतें दीं और वन अधिकार वापस कर दिये।

रामोसी विद्रोह (1822- 1829)

- रामोसिस पश्चिमी घाट की पहाड़ी जनजातियाँ थीं।
- वे अंग्रेजों की कब्जे की नीति से नाराज थे और चित्तूर सिंह के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ उठ खड़े हु ए।
- नई ब्रिटिश प्रशासन प्रणाली, जिसे आदिवासी लोग अपने प्रति बेहद अनुचित मानते थे और उनके पास अंग्रेजों के खिलाफ उठने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं था, इस विद्रोह का प्राथमिक कारण थी।
- उन्होंने सतारा के आसपास के क्षेत्रों को लूटा।
- विद्रोह 1829 तक जारी रहा, जिसके बाद अंग्रेजों ने इस क्षेत्र में व्यवस्था बहाल कर दी।
- अंग्रेजों ने रामोसिस के प्रति शांतिवादी नीति अपनाई और उनमें से कुछ को पहाड़ी पुलिस में भर्ती किया गया।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

कोल विद्रोह (1832)

- कोल विद्रोह ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सबसे प्रसिद्ध क्रांतियों में से एक है।
- कोल **छोटानागपुर** क्षेत्र में रहने वाली जनजातियों में से एक थी। वे अपने पारंपरिक मुखियाओं के अधीन पूर्ण स्वायत्तता में रहते थे लेकिन ब्रिटिश आने के बाद यह बदल गया।
- अंग्रेजों के साथ बाहरी लोग भी आये। औपनिवेशिक सरकार ने गैरसाहू कारोंआदिवासी-, जमींदारों और व्यापारियों की अवधारणा भी पेश की।
- कोल लोगों ने तब बाहर से आए किसानों के हाथों अपनी ज़मीनें खो दीं और उन्हें करों के रूप में भारी मात्रा में धन भी देना पड़ा। इसके कारण कई लोग बंधुआ मजदूर बन गए।
- इसके प्रति ब्रिटिश न्यायिक नीतियों के कारण भी कोल लोगों में आक्रोश फैल गया।
- 1831-32 में एक **विद्रोह हु आथा** जिसमें कोल लोगों ने खुद को **बुद्धोभगत के नेतृत्व में संगठित किया** और अंग्रेजों और साहू कारोंके खिलाफ विद्रोह किया।
- उन्होंने कई बाहरी लोगों को मार डाला और घर जला दिये। यह सशस्त्र प्रतिरोध **दो साल तक चला** जिसके बाद अंग्रेजों ने अपने बेहतर हथियारों से इसे बेरहमी से दबा दिया।
- कोल विद्रोह इतना तीव्र था कि इसे कुचलने के लिए कलकत्ता और बनारस से सेना बुलानी पड़ी।

संथाल विद्रोह (1855- 1856)

- संथाल हू ल(है जाता जाना भी में रूप के विद्रोह संथाल जिसे) 1855 से 1856 तक वर्तमान झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के क्षेत्रों में अंग्रेजों के साथहु आ खिलाफ के प्रथा जमींदारी साथ-, जब अंग्रेजों ने आंदोलन को कुचल दिया था।
- जब बंगाल प्रेसीडेंसी में जमींदारी प्रथा शुरू की गई, तो ब्रिटिश और जमींदारों ने पारंपरिक संथाल भूमि पर अपना दावा किया।
- जमींदारों द्वारा संथालों का बेरहमी से शोषण किया जाता था, जो अत्यधिक ब्याज दरें कभ)ीकभी-500% तकथे वसूलते (, जिससे यह सुनिश्चित हो जाता था कि आदिवासी कभी भी अपना ऋण चुकाने में सक्षम नहीं थे।
- उन्होंने अपनी जमीन खो दी और बंधुआ मजदूर भी बन गये। उन्हें जबरन वसूली, संपत्ति से जबरन वंचित करना, दुर्व्यवहार और हिंसा, व्यापारिक सौदों में धोखाधड़ी, जानबूझकर उनकी फसलों को रौंदना आदि सहना पड़ा।
- सरकार ने उन आदिवासियों की मदद करने के बजाय जमींदारों का समर्थन किया जिनकी शिकायतें वास्तविक थीं।
- विद्रोह **जून 1855 में शुरू हु आ**जब **दो भाइयों सिधू और कान्हू मुर्मू ने** 10000 संथालों को संगठित किया और सशस्त्र विद्रोह शुरू किया। उनका प्राथमिक उद्देश्य विदेशी या ब्रिटिश शासन को पूरी तरह से नष्ट करना था।
- **संथाल, जो मुख्य रूप से राजमहल और भागलपुर के बीच दमनक्षेत्रों वाले जाने जाने से नाम के इकोह-थे रहते में, बाहरी लोगों के खिलाफ विद्रोह में उठ खड़े हु ए जिन्हें वे दिकुस** " " कहते थे।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

- उन्होंने कई साहूकारों और कंपनी एजेंटों को मार डाला। विद्रोह बहुत तीव्र और बड़े पैमाने पर था। संथाल समुदाय आज भी विद्रोह दिवस मनाता है।
- विद्रोह को अंग्रेजों ने हिंसक तरीके से दबा दिया और दोनों नेताओं सहित लगभग 20000 संथाल मारे गए।

खोंड विद्रोह (1837-56)

- खोंड लोग बंगाल से तमिलनाडु के साथथे। हुएबसे में क्षेत्रों पहाड़ी फैले तक प्रांतों मध्य साथ-
- अगम्य पहाड़ी इलाका होने के कारण, अंग्रेजों के आने से पहले वे पूरी तरह से स्वतंत्र थे।
- **1837 से 1856 के बीच, वे चक्र बिसोई** के नेतृत्व में वन प्रथाओं के शोषण के लिए अंग्रेजों के खिलाफ उठे, जिन्होंने " **यंग राजा** " नाम अपनाया ।
- घुमुसर, कालाहांडी और पटना क्षेत्रों के आदिवासी लोगों ने विद्रोह में भाग लिया।
- ब्रिटिशों द्वारा " **मारिया** " (बलिदान बाद उसके और प्रयास का करने घोषित गैरकानूनी को प्रथा की (की करों नए शुरूआत, साथ ही जमींदारों और साहूकारोंआमद की (साहूकारों), उनके विद्रोह के मुख्य कारण थे।
- धनुषबाण-, तलवार और कुल्हाड़ियों का उपयोग करते हुए, कोल्स ब्रिटिश" निर्मित- **मारिया एजेंसी " हुए। खड़े उठ में विद्रोह खिलाफ के** "
- इसके अतिरिक्त, राधा कृष्ण दंड सेना के नेतृत्व में कुछ स्थानीय मिलिशिया गुटों ने उनकी मदद की। विद्रोह अंततः 1955 में समाप्त हुआ जब चक्र बिसोई को बंदी बना लिया गया।

मुंडा विद्रोह (1899- 1900)

- देश में व्यापक ब्रिटिश शासन के खिलाफ सबसे प्रसिद्ध क्रांतियों में से एक प्रारंभिक मुंडा विद्रोह था। छोटानागपुर क्षेत्र में मुंडाओं का निवास था।
- इस विद्रोह को **उलगुलान विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है** जिसका अर्थ है ।"हंगामा महान"
- 1789 और 1832 के बीच, मुंडाओं ने साहूकारोंऔर ब्रिटिश सरकार द्वारा किए गए उत्पीड़न के खिलाफ लगभग सात बार विद्रोह किया। खुंटकट्टी **प्रणाली** , जो भूमि की संयुक्त जोत थी, मुंडाओं के बीच प्रचलित थी। लेकिन अंग्रेजों और बाहरी जमींदारों के आगमन ने खुनकट्टी की जगह जमींदारी प्रथा ला दी। इससे आदिवासियों में ऋणग्रस्तता और बेगार पैदा हुई।
- इसके आंदोलन को सरदारिलादाई, या स नाम के "युद्ध का नेताओं"े जाना जाता था और उनका मुख्य लक्ष्य बाहरी लोगों, या था। करना बेदखल को "दिकुओं"
- उज्जवल भविष्य की आशा में कई मुंडा 1857 के बाद गए। हो शामिल में "मिशन लूथरन इवेंजेलिकल"
- हालाँकि, जैसे ही उन्हें एहसास हुआकि ये मिशनरियाँ उन्हें कोई दीर्घकालिक लाभ नहीं दे सकतीं, कई धर्मत्यागियों ने इस मिशन के खिलाफ विद्रोह कर दिया और और भी अधिक शत्रुतापूर्णहो गए।
- उन्होंने अपने डोमेन पर मुंडा पारंपरिक प्रमुखों का प्रभुत्व स्थापित करने की मांग की। लेकिन, हर बार जब उनके पास कोई करिश्माई नेता नहीं होता, तो उनका आंदोलन कम हो जाता।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

- हालाँकि, मुंडाओं को **बिरसा मुंडा के रूप में एक सक्षम और करिश्माई नेता मिलने में सफलता मिली** , जिन्होंने 1894 में विद्रोह की घोषणा की।
- उन्होंने अपने लोगों को सरकार के खिलाफ खुले तौर पर विद्रोह करने के लिए संगठित किया। उन्होंने लोगों से कर्ज़ और कर चुकाना बंद करने का आग्रह किया।
- उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 1897 में रिहा होने से पहले उन्होंने 2 साल जेल में बिताए।
- दिसंबर 1899 में उन्होंने जमींदारों और सरकार के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष शुरू किया।
- मुंडाओं ने पुलिस स्टेशनों, जमींदारों के घरों, चर्चों और ब्रिटिश संपत्ति को आग लगा दी।
- 1900 में बिरसा मुंडा पकड़े गये। मात्र 25 वर्ष की आयु में हैजा के कारण जेल में उनकी मृत्यु हो गई।

कोया विद्रोह (1879-1880)

- खोंडा सारा कमांडरों की सहायता से, पूर्वी गोदावरी ट्रैक ने कोयाओं के (आंध्र अब) 1803, 1840, 1845, 1858, 1861 और 1862 में विद्रोह किया।
- 1879-1880 में टॉमा सोरा के नेतृत्व में वे एक बार फिर उठ खड़े हु ए।
- उन्होंने पुलिस और साहू कारों द्वारा सताए जाने, नई सीमाओं और वन क्षेत्रों पर उनके ऐतिहासिक अधिकारों से इनकार किए जाने की शिकायत की।
- टॉमा सोरा के निधन के बाद, राजा अनंतय्यार ने 1886 में एक नए विद्रोह का नेतृत्व किया।
- ये 18वीं और 19वीं शताब्दी में गैर-सीमांत आदिवासियों द्वारा किए गए मु ख्य विद्रोह थे। 20वीं सदी के कुछ महत्वपूर्ण विद्रोह हैं:

ताना भगत आंदोलन/उराँव आंदोलन (1914-1919)

- छोटानागपुर का बिहार क्षेत्र इस आंदोलन का केंद्र बिंदु था।
- यह एक आदिवासी विद्रोह था जो 1914 और 1919 के बीच हु आ था और इसका नेतृत्व जतरा ओराँव और ताना भगत या ओराँव के एक समूह ने किया था।
- इसे पहले कुरुख धरम कहा जाता था और यह विशुद्ध रूप से एक धार्मिक आंदोलन था, जो मुंडा आंदोलन समान के (धर्म मूल का उरांवों) था।
- उन्होंने अंततः ब्रिटिश सरकार के साथ किया। विरोध भी का साहू कारों और जमींदारों साथ-
- महात्मा गांधी की तरह टाना भगत भी अहिंसा के समर्थक थे।
- अंततः ब्रिटिश सरकार ने क्रूरतापूर्वक इस विद्रोह को समाप्त कर दिया।

रम्पा विद्रोह (1922-1924)

- अल्लूरी सीताराम राजू रम्पा विद्रोह के नेता थे, जो वर्तमान आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम और पूर्वी गोदावरी जिलों में हु आ था।
- बंगाली क्रांतिकारियों ने एएस राजू के लिए प्रेरणा का काम किया, जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह शुरू करने के लिए उनके उदाहरण का इस्तेमाल किया।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

- 1922 से 1924 तक, अल्लूरी और उनके समर्थकों ने इस विद्रोह को अंजाम दिया, जिसमें कई पुलिस स्टेशनों पर विरोध प्रदर्शन, कई अधिकारियों की हत्या और हथियार और गोलाशामिल चोरी की बारूद- थी।
- 1924 में अल्लूरी राजू को पकड़कर एक पेड़ से बाँधकर गोली मारकर हत्या करने के बाद अंग्रेज अंततः इस आंदोलन को ख़त्म करने में सफल रहे।

18वीं और 19वीं शताब्दी में लोकप्रिय विद्रोह - राजनीतिकआंदोलन धार्मिक-
1921 का मोपला विद्रोह
अपदस्थ सरदारों और जमींदारों द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध लोकप्रिय विद्रोह

उत्तरजनजाती पूर्व-य आंदोलन

सीमांत आदिवासियों ने भी अपनी भूमि पर ब्रिटिश कब्जे के खिलाफ विद्रोह किया। मुख्य सीमांत जनजातीय विद्रोह थे खासी विद्रोह (1830), अहोम विद्रोह (1828) और सिंघफोस विद्रोह। 20वीं सदी में रानी गाइदिनिल्यू ने नागा आंदोलन का नेतृत्व किया।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि:

- उत्तरजनजातियाँ की क्षेत्र पूर्वी-, जिनके आदिवासी और सांस्कृतिक दोनों स्तरों पर सीमा पार के देशों से संबंध थे, राष्ट्रवादी आंदोलन में अधिक रुचि नहीं रखती थीं। उनके विद्रोह अक्सर भारतीय संघ के अंदर पूर्ण स्वतंत्रता या राजनीतिक स्वायत्तता के समर्थन में थे।
- उत्तरहु ई।शुरू से देर काफी में तुलना की भूमि जनजातीय रहित सीमा बसावट ब्रिटिश में क्षेत्रों पूर्वी- इस तथ्य के कारण कि ये आदिवासी आम तौर पर भूमि और जंगलों के प्रभारी थे, ये क्रांतियाँ न तो कृषि या वनथीं। विद्रोह आधारित-
- अंग्रेजों के खिलाफ सीमांत में जनजातीय विद्रोह गैर समय अधिक में तुलना की जनजातियों सीमांत- चला। तक

अहोम विद्रोह (1828-30)

- प्रथम बर्मा युद्ध)1824-1826) के समापन के बाद, अंग्रेजों ने अपना शासन समाप्त करने की प्रतिबद्धता जताई। इसके बजाय, जब पहला बर्मा युद्ध समाप्त हो गया, तो अंग्रेजों ने असम में अहोम प्रांतों पर कब्ज़ा करने का प्रयास किया।
- इसके परिणामस्वरूप, अहोमों ने असंतोष के कारण 1828 में **गोमधर कोंवर के नेतृत्व में औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ विद्रोह कर दिया।**
- महाराजा पुरंदर सिंह नरेंद्र को ऊपरी असम और राज्य के कुछ अन्य क्षेत्रों पर नियंत्रण देकर, अंग्रेजों ने अंततः एक सुलह रणनीति अपनाने का निर्णय लिया।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

खासी विद्रोह (1830)

- बर्मी युद्ध समाप्त होने पर गारो और जैंतिया पहाड़ियों के बीच के पहाड़ी इलाकों पर अंग्रेजों का कब्जा हो गया।
- औपनिवेशिक सरकार ने एक ऐसी सड़क बनाने की योजना बनाई जो पूरे देश को पार करेगी और ब्रह्मपुत्र घाटी को सिलहट क्षेत्र, खासी क्षेत्र से जोड़ेगी।
- सड़क निर्माण के लिए मजदूरों की भर्ती के परिणामस्वरूप खासी लोगों ने तिरुत सिंह नामक खासी सरदार के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया। वे गारो से जुड़े हुए थे।
- खासियों के साथ चार साल तक चली लड़ाई को अंततः 1833 के शुरुआती महीनों में बेरहमी से समाप्त कर दिया गया।

सिंगफोस का विद्रोह (1830)

- सिंघफोस ने 1830 के दशक की शुरुआत में औपनिवेशिक सरकार का विरोध किया, जबकि अंग्रेज खासी द्वारा पेश की गई चुनौती को रद्द करने में व्यस्त थे।
- अंग्रेज़ चार महीने के बाद ही इस विद्रोह को ख़त्म करने में कामयाब रहे।
- लेकिन 1830 में, सिंघफोस एक बार फिर उठ खड़ा हुआ, और काफी ताकत से ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट को मार डाला।
- सिंघफोस के प्रमुख निरंग फिदु ने भी 1843 में ब्रिटिश गैरीसन पर हमला किया, जिसमें कई सैनिक मारे गए। बाद में 1849 में खस्मा सिंगफोस द्वारा असम में एक ब्रिटिश बस्ती पर हमला किया गया।
- अंततः ब्रिटिश सरकार ने बेरहमी से इस विद्रोह को ख़त्म कर दिया।

भारत में जनजातीय विद्रोह के कारण

- **स्थायी कृषि की प्रथा** : आदिवासियों का मुख्य आधार स्थानांतरित कृषि, शिकार, मछली पकड़ना और वन उपज का उपयोग था। आदिवासियों के पारंपरिक क्षेत्रों में गैरसाथ के आगमन के आदिवासियों-, **स्थायी कृषि की प्रथा** शुरू हुई।
- इससे जनजातीय आबादी के लिए भूमि का नुकसान हुआ।आदिवासी **भूमिहीन खेतिहर मजदूर बनकर रह गये** ।
- वन उपज के उपयोग, स्थानांतरित कृषि और शिकार प्रथाओं पर प्रतिबंध लगाए गए थे। इससे आदिवासियों को **आजीविका का नुकसान हुआ।**

बाहरी लोगों का परिचय: अंग्रेज़ों ने आदिवासी क्षेत्रों में साहूकारों जैसे **बाहरी लोगों को लाया** जिसके कारण स्थानीय आदिवासियों का गंभीर शोषण हुआ।नई आर्थिक व्यवस्था के तहत वे बंधुआ मजदूर बन गये।

गैरस्वामित्व निजी द्वारा जमींदारों आदिवासी- : आदिवासी समाजों में भूमि के संयुक्त स्वामित्व की प्रणाली थी जिसे निजी संपत्ति की धारणा से बदल दिया गया था।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

समाज गैर:गया बन समतावादी- आदिवासी समाज मुख्यधारा के समाज की तुलना में पारंपरिक रूप से समतावादी था, जो जाति और वर्ग भेदों से चिह्नित था। गैर से आने के लोगों बाहरी या आदिवासियों- लगा। जाने किया वर्गीकृत अंतर्गत के पायदान निचले सबसे के समाज को आदिवासियों

वन अधिनियमों का परिचय: मुख्य रूप से भारतीय वनों के समृद्ध संसाधनों को नियंत्रित करने के लिए सरकार द्वारा 1864 में एक वन विभाग की स्थापना की गई थी। 1865 के सरकारी **वन अधिनियम** और **1878 के भारतीय वन अधिनियम ने** वन भूमि पर पूर्ण सरकारी एकाधिकार स्थापित कर दिया।

ईसाई मिशनरियों के कार्यों से आदिवासी समाज में सामाजिक उथल उन्हें इससे और मची भी पुथल- भी नाराजगी हु ईक्योंकि वे मिशनरियों के कार्यों को उपनिवेशवाद का विस्तार मानते थे।

जनजातीय विद्रोह का एक वर्ग **जमींदारों द्वारा** लकड़ी और चरागाह क्षेत्रों के पारंपरिक उपयोग पर कर लगाने, पुलिस शुल्क, नए उत्पाद शुल्क नियमों, कम देश के व्यापारियों और साहूकारों के शोषण, और जंगलों में कृषि को स्थानांतरित करने की सीमाओं की प्रतिक्रिया थी। .

इन विद्रोहों की कमज़ोरियाँ:

- जनजातीय विद्रोह समग्रता में बड़े पैमाने पर थे लेकिन स्थानीयकृत और अलगथे। थलग-
- वे स्थानीय समस्याओं और शिकायतों का परिणाम थे।
- विद्रोह में एक मजबूत नेतृत्व का अभाव था क्योंकि वे चरित्र में अर्धसामंती-, पीछे की ओर देखने वाले और दृष्टिकोण में पारंपरिक थे और उनका प्रतिरोध किसी सामाजिक विकल्प का प्रतिनिधित्व नहीं करता था।

हालाँकि, कुल मिलाकर, ये विद्रोह अधिनायकवाद के प्रति स्थानीय प्रतिरोध की मूल्यवान परंपराएँ स्थापित करने में सक्षम थे।

ब्रिटिश भारत में जनजातीय विद्रोह (यूपीएससी नोट्स)

कई सरकारी परीक्षाओं के लिए, भारतीय इतिहास में आदिवासी आंदोलनों का विषय काफी प्रासंगिक है, और इस विषय के महत्व को केवल परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकार के बारे में जागरूक होकर ही समझा जा सकता है। इसलिए अभ्यर्थियों को विषय पर पर्याप्त प्रश्नों का अभ्यास करना चाहिए।

भारत की प्रमुख जनजातियां कीन जातियां

'जनजाति', लोगों का एक समूह है जो समान वंशावली और संस्कृति को साझा करते हैं। भारत की जनजातियां देश के लगभग सभी राज्यों में फैली हु ईहै। अलग- अलग राज्यों में इनके रीति-रिवाज और रहन सहन भी एकदम अलग होते हैं। जनजातियां, भारतीय आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

जनजातीय संस्कृति भारत की अमूर्त राष्ट्रीय विरासत का एक अभिन्न अंग है। इसलिए, इस लेख में हम आपको भारत की कुछ महत्वपूर्ण जनजातियों के बारे में विस्तार से जानकारी दे रहे हैं।

आईएएस परीक्षा 2023 की तैयारी करने वाले उम्मीदवार 'भारत की प्रमुख जनजातियों के बारे में अधिक जानने के लिए इस लेख को ध्यान से पढ़ें। इस लेख में हम आपको भारत की प्रमुख जनजातियों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति के साथ उनके जीवन निर्वाह के लिए आने वाली चुनौतियों और सरकार के प्रयासों के बारे में विस्तार से जानकारी देंगे।

जनजाति

जनजाति, उस सामाजिक समुदाय को कहा जाता है जो राज्य के विकास से पहले अस्तित्व में था, लेकिन वह राज्य के बाहर निवास करता है। भारत के संविधान में अनुसूचितजनजाति शब्द का प्रयोग हुआहै। इसलिए इसके लिए विशेष प्रावधान लागू किए गए हैं। जनजाति, भारत के आदिवासियों के लिए इस्तेमाल होने वाला एक वैधानिक शब्द है।

भारत की जनजातीय आबादी

जनजातीय आबादी, पूरे भारत में अलग- अलग हिस्सों में फैली हुईहै। देश के लगभग सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के कई इलाकों में आदिवासी समुदाय के लोग निवास करते हैं।

भारत में अधिकतम जनजातीय आबादी वाले राज्य है –

- मिजोरम (जनसंख्या का 94.4%)
- लक्षद्वीप (94%)
- मेघालय (86.1%)
- नागालैंड (86.5%)

इसके अलावा, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़, असम और पश्चिम बंगाल में भी महत्वपूर्ण जनजातीय बस्तियां हैं। अगर व्यापक रुप से देखा जाए तो, अनुसूचितजनजातियां भारत की कुल जनसंख्या का करीब 8.6% हैं। ये तथ्य यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा 2023 की तैयारी करने वाले उम्मीदवारों के लिए बेहद मददगार साबित होंगे।

इसके साथ ही, भारत में जनजातीय आबादी की स्थिति पर चर्चा करते समय उम्मीदवारों को यह भी जानना चाहिए कि हमारे देश में 700 से अधिक जनजातियां निवास करती हैं जिन्हें भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत अधिसूचित किया गया है। ये सभी अलग-अलग राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में निवास करते हैं।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

भारत में पाई जाने वाली प्रमुख जनजातियां

भारत की सबसे अधिक ज्ञात जनजातियों में गोंड, भील, संथाल, मुंडा, खासी, गारो, अंगामी, भूटिया, चेंचू, कोडाबा और ग्रेट अंडमानी जनजातियां शामिल हैं।

साल 2011 की जनगणना के अनुसार, इन सभी जनजातियों में, भील आदिवासी समूह, भारत की सबसे बड़ी जनजाति है। यह देश की कुल अनुसूचितजनजातीय आबादी का करीब 38% है।

नीचे प्रमुख राज्य और उनमें निवास करने वाले जनजातियों के समूहों के बारे में जानकारी दी जा रही है –

भारतीय राज्य का नाम	**निवास करने वाली प्रमुख जनजातियां**
सिक्किम	लेपचा
बिहार	बैंगा, बंजारा, मुण्डा, भुइया, खोंड
मध्य प्रदेश	भील, मिहाल, बिरहोर, गडावां, कमार, नट
उड़ीसा	बैगा, बंजारा, बड़होर, चेंचू, गड़ाबा, गोंड, होस, जटायु, जुआंग, खरिया, कोल, खोंड, कोया, उरांव, संथाल, सओरा, मुन्डुप्पतू।
पंजाब	गद्दी, स्वागंला, भोट।
अरुणाचल प्रदेश	अबोर, अक्का, अपटामिस, बर्मास, डफला, गालोंग, गोम्बा, काम्पती, खोभा मिसमी, सिगंपो, सिरडुकपेन।
अंडमान-निकोबार द्वीप समूह	औंगी आरबा, उत्तरी सेन्टीनली, अंडमानी, निकोबारी, शोपन।
तमिलनाडु	टोडा, कडार, इकला, कोटा, अडयान, अरनदान, कुट्टनायक, कोराग, कुरिचियान, मासेर, कुरुम्बा, कुरुमान, मुथुवान, पनियां, थुलया, मलयाली, इरावल्लन, कनिक्कर,मन्नान, उरासिल, विशावन, ईरुला।
कर्नाटक	गौडालू, हक्की, पिक्की, इरुगा, जेनु, कुरुव, मलाईकुड, भील, गोंड, टोडा, वर्ली, चेन्चू, कोया, अनार्दन, येरवा, होलेया, कोरमा
केरल	कडार, इरुला, मुथुवन, कनिक्कर, मलनकुरावन, मलरारायन, मलावेतन, मलायन, मन्नान, उल्लातन, यूराली, विशावन, अर्नादन, कहुर्नाकन, कोरागा, कोटा, कुरियियान,कुरुमान, पनियां, पुलायन, मल्लार, कुरुम्बा।
छत्तीसगढ़	कोरकू, भील, बैगा, गोंड, अगरिया, भारिया, कोरबा, कोल, उरांव, प्रधान, नगेशिया, हल्वा, भतरा, माडिया, सहरिया, कमार, कंवर।
त्रिपुरा	लुशाई, माग, हलम, खशिया, भूटिया, मुंडा, संथाल, भील, जमनिया, रियांग, उचाई।
जम्मू-कश्मीर	गुर्जर, भरवर वाल।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

गुजरात	कथोड़ी, सिद्दीस, कोलघा, कोटवलिया, पाधर, टोडिया, बदाली, पटेलिया।
उत्तर प्रदेश	बुक्सा, थारू, माहगीर, शोर्का, खरवार, थारू, राजी, जॉनसारी।
उत्तरांचल	भोटिया, जौनसारी, राजी।
महाराष्ट्र	भील, गोंड, अगरिया, असुरा, भारिया, कोया, वर्ली, कोली, डुका बैगा, गडावास, कामर, खडिया, खोंडा, कोल, कोलम, कोर्कू, कोरबा, मुंडा, उरांव, प्रधान, बघरी।
पश्चिम बंगाल	होस, कोरा, मुंडा, उरांव, भूमिज, संथाल, गेरो, लेप्चा, असुर, बैगा, बंजारा, भील, गोंड, बिरहोर, खोंड, कोरबा, लोहरा।
हिमाचल प्रदेश	गद्दी, गुर्जर, लाहौल, लांबा, पंगवाला, किन्नौरी, बकरायल।
मणिपुर	कुकी, अंगामी, मिजो, पुरुम, सीमा।
मेघालय	खासी, जयन्तिया, गारो।
असम व नगालैंड	बोडो, डिमसा गारो, खासी, कुकी, मिजो, मिकिर, नगा, अबोर, डाफला, मिशमिस, अपतनिस, सिंधो, अंगामी।
झारखण्ड	संथाल, असुर, बैगा, बन्जारा, बिरहोर, गोंड, हो, खरिया, खोंड, मुंडा, कोरवा, भूमिज, मल पहाडिया, सोरिया पहाडिया, बिझिया, चेरू लोहरा, उरांव, खरवार, कोल, भील।
आंध्र प्रदेश	चेन्चू, कोचा, गुड़ावा, जटापा, कोंडा डोरस, कोंडा कपूर, कोंडा रेड्डी, खोंड, सुगेलिस, लम्बाडिस, येलडिस, येरुकुलास, भील, गोंड, कोलम, प्रधान, बाल्मिक।
राजस्थान	मीणा, भील, गरसिया, सहरिया, सांसी, दमोर, मेव, रावत, मेरात, कोली।

भील जनजाति

भील जनजाति की अपनी भाषा भी है, लेकिन इस समुदाय के अधिकांश सदस्य जहां रहते हैं वहां की आधिकारिक राज्य भाषा भी बोलते हैं। उदाहरण के लिए महाराष्ट्र में रहने वाले जनजाति समुदाय के लोग मराठी भाषा बोलते हैं, वहीं गुजरात में रहने वाली अधितकतर जनजातियां गुजराती भाषा बोलती हैं। कुछ जनजातियों की जड़ें महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, गुजरात के कुछ हिस्सों, राजस्थान और यहां तक कि त्रिपुरा के कुछ हिस्सों में हैं, जो इन्हें भारत की सबसे बड़ी जनजाति बनाती हैं।

इसके अतिरिक्त, भील भारत की अनुसूचितजनजातियों में से एक है जो अपनी कला रुप (भील कला) के लिए बेहद प्रसिद्ध है। इन कलाकृतियों का उद्देश्य जनजाति के सदस्यों के दैनिक जीवन को चित्रित करना है। इस जनजाति के कलाकार नीम के पेड़ की टहनियों और शाखाओं और ब्रश का उपयोग कर के विभिन्न पत्तियों और फूलों से प्राप्त प्राकृतिक रंग वर्णक से सुंदर कलाकृतियां बनाते हैं।

भील कला, देवी-देवताओं और पूर्वजों का विभिन्न रंगों और पैटर्न में पेंटिंग के रुप में डॉट्स से किया गया चित्रण अपने आप में बहुतअनूठा है।

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

गोंड जनजाति

गोंड जनजाति, जनसंख्या के आकार के मामले में भीलों के बाद दूसरे स्थान पर है। भारत की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति कहलाने वाली गोंड जनजाति आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, बिहार और उड़ीसा जैसे राज्यों में फैली हुईहै। गोंड, जनजातीय सदस्यों की एक विशाल आबादी वाला समूह है। यह देश की कुल जनजातीय आबादी का एक बड़ा प्रतिशत (35.6%) है।

गोंड जनजाति

गोंड, भारत की एक प्रमुख जाती हैं। इस समुदाय के अधिकतर लोग विंध्यपर्वत,सिवान, सतपुड़ा पठार, छत्तीसगढ़ मैदान तथा दक्षिण-पश्चिम में गोदावरी नदी के आसपास निवास करते हैं। आस्ट्रोलायड नस्ल तथा द्रविड़ परिवार की यह जनजाति पांचवीं और छठी शताब्दी में दक्षिण से गोदावरी के तटों तक फैल गई थी।

मध्य भारत के पहाड़ों और जंगलों में निवास करने वाले इन लोगों की जातिय भाषा को गोंडी भाषा कहा जाता है। यह भाषा द्रविड़ परिवार की है और तेलुगु, कन्नड़, तमिल से संबध रखती है। गोंड समुदाय के लोग उत्तर प्रदेश में वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मीरजपुर,जौनपुर, भदोही, आजमगढ़, गाज़ीपुर, मऊ, देवरिया, बलिया, आदि जनपदों में भी निवास करते हैं।

संथाल

संथाल, गोंड और भील के बाद देश का तीसरा सबसे बड़ा अनुसूचितजनजाति समुदाय है । यह झारखण्ड की सबसे बड़ी जनजति है । 2022 में देश की 15वीं राष्ट्रपति बनी द्रौपदी मुर्मूइसी जनजाति से हैं । वह भारत की पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति हैं ।

अनुसूचितजाति और अनुसूचितजनजाति अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान (SCSTRTI) के अनुसार, संथाल शब्द दो शब्दों से बना है: 'संथा' और 'अला' । 'संथा' का अर्थ है शांत और शांतिपूर्ण; जबकि 'अला' का अर्थ है मनुष्य ।

संथाल मुख्यरूप से कृषक होते हैं । संथाल आबादी ज्यादातर ओडिशा, झारखंड, बिहार और पश्चिम बंगाल में वितरित है । "संथाली" संथालों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है और इसकी अपनी लिपि है जिसे **ओलचिकी** कहा जाता है । संथाली भाषा संविधान की आठवीं अनुसूची में भी शामिल है । संथालों की पारंपरिक चित्रकला को **जादो पाटिया** कहते हैं । संथालों की प्रमुख ख्याति 1855-56 के संथाल विद्रोह के कारण भी है । **कार्ल मार्क्स** ने इस विद्रोह को **भारत की प्रथम जनक्रांति** की संज्ञा दी थी । इसकी चर्चा उन्होंने अपनी बहु चर्चितपुस्तक "द कैपिटल" में भी की है ।

भारतीय जनजातियों पर अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

'अनुसूचितजनजाति' शब्द का क्या अर्थ है?

© Eureka Journals 2023. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

अनुसूचित जनजाति शब्द का अर्थ, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित लोगों का समूह है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 366 (25) के अनुसार, अनुसूचित जनजातियां "ऐसी जनजातियां या आदिवासी समुदाय या ऐसी जनजातियों या जनजातीय समुदायों के हिस्से या समूह हैं जिन्हें संविधान के प्रयोजनों के लिए अनुच्छेद 342 के तहत अनुसूचित जनजाति माना जाता है।"

आदिवासी समाज में मुखिया कौन होता है?

जनजातीय समुहों में मुखिया एक जनजाति का नेता होता है जो जनजाति के सदस्यों का मार्गदर्शन करता है। वह बंद समाज के संरक्षक के रुप में काम करता है।

आदिवासी संस्कृति भारत के लिए क्यों महत्वपूर्ण है?

आदिवासी लोग और उनकी संस्कृति भारत के लिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि वे पर्यावरण के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और उसका ज्ञान रखते हैं जो पारिस्थितिक संतुलन को बहाल करने में मदद कर सकते हैं।